सलीकेदार लोगों के बच्चों में ऑटिज़्म का खतरा

नेदरलैण्ड के सूचना तकनीक उद्योग के केंद्र आइंडहॉवेन में काम कर रहे लोगों के बच्चों को ऑटिज़्म होने का खतरा उन शहरों के मुकाबले दो से चार गुना तक ज़्यादा है, जो लगभग उतने ही बड़े हैं मगर जहां सूचना टेक्नॉलॉजी में कम लोग काम करते हैं।

यह परिणाम पहले दिए गए उन सुझावों की पुष्टि करता है कि जो लोग हाई-टेक इंजीनियरिंग व कंप्यूटिंग उद्योग में काम करते हैं, जहां सलीके और विश्लेषण के हुनर की मांग ज़्यादा होती है, उनके बच्चों के ऑटिस्टिक होने की आशंका भी ज़्यादा होती है। ऑटिज़्म का बढ़ता प्रकोप कैलिफोर्निया की सिलिकॉन वैली जैसे क्षेत्रों में भी देखा गया है। मगर नेदरलैण्ड में किया गया अध्ययन यह संकेत देता है कि सूचना टेक्नॉलॉजी कर्मियों का संकेंद्रण ऑटिज़्म को बढ़ावा देता है।

कैम्ब्रिज के ऑटिज़्म रिसर्च सेंटर के सिमोन बैरन-कोहेन व उनके साथियों ने नेदरलैण्ड के तीन शहरों के 62,000 स्कूली बच्चों में ऑटिज़्म के आंकड़ों का विश्लेषण किया है। इन तीनों शहरों की आबादी ढाई लाख से अधिक है। आइंडहॉवेन में कुल नौकरियों में से 30 प्रतिशत सूचना टेक्नॉलॉजी व कंप्यूटिंग उद्योग में हैं। यहां 10,000 स्कूली बच्चों में ऑटिज़्मनुमा गड़बड़ी के 229 मामले मिले। यह संख्या दो अन्य शहरों हार्लेम (84) तथा उट्रेख्ट (57) से कहीं अधिक है। हार्लेम व उट्रेख्ट में सूचना टेक्नॉलॉजी कर्मियों की तादाद आइंडहॉवेन से आधी है।

इससे पहले किए गए अध्ययनों में बैरन-कोहेन ने दर्शाया था कि ऑटिज़्म से पीड़ित बच्चों के पिता और दादा के इंजीनियर होने की संभावना काफी ज़्यादा होती है। इसी प्रकार से गणितज्ञों के भाई-बहन भी सामान्य से ज़्यादा ऑटिज़्म पीड़ित होते हैं। इसके अलावा, यू.के., जापान व नेदरलैण्ड में किए गए अध्ययनों से भी पता चला है कि इंजीनियरिंग, विज्ञान व गणित के छात्रों में ऑटिज़्म की दर सामान्य से अधिक होती है।

शोधकर्ताओं का कहना है कि व्यवस्थित करने की प्रक्रिया आपको किसी तंत्र के कामकाज की भविष्यवाणी करने और उसे नियंत्रित करने की क्षमता देती है। लगता है कि यदि आप इस काम में बढ़िया हैं, तो आपके बच्चों में ऑटिज़्म की संभावना बढ़ती है।

वैसे शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि आइंडहॉवेन में ऑटिज़्म की शिनाख्त अधिक होती है और लोगों में इसके प्रति जागरुकता भी ज़्यादा है। हो सकता है वहां पाए गए मामले इस वजह से भी ज़्यादा हों। मगर शोधकर्ताओं ने यह भी देखा कि सूचना टेक्नॉलॉजी के अन्य केंद्रों में भी ऑटिज़्म ग्रस्त बच्चों की संख्या सामान्य से ज़्यादा है।

किसी ने भारतीय सूचना टेक्नॉलॉजी केंद्रों का ऐसा कोई अध्ययन नहीं किया है। फिलहाल यही कहा जा सकता है कि हाई-टेक कंपनियों, और शिक्षण केंद्रों को अपने कर्मचारियों और उनके बच्चों में ऑटिज़्म के प्रति सतर्क रहने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***